JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समसामयिक संदर्भ में रामचरितमानस की प्रासंगिकता

डॉ. बि. अमरनाथ शर्मा
संस्कृत प्राध्यापक
श्री वेंकटेश्वर कलाषाला
नई दिल्ली – 110021

प्रस्तावना - मानव वर्तमान समाज में ग्रहस्थ वोध तथा परहित मल्यो द्वारा सांसारिक समस्याओ और चुनौतियों में भी संघर्षरत रहने की जीवनशक्ति प्रदान करता है तुलसी का मानस मानवीय एकता और विष्ववधुत्व के संदेश का भी परचम सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में फहरा रहा है और भविष्य में भी फहरात रहेगा। मानस में तुलसी जिन नैतिक मानदंडों का राम से पालन करवाते है। वे तल्लीदास की सामंतो विष्व दृष्टि और जीवन मूल्यों की परिचायक है

गोस्वामी तुक्सीदास जी को मध्ययुग का जननायक माना जाता है। तुलसीदास राम काव्य के पुरोधा कवि है। क्योकि इन्होंने अपने योग की विशेष परिस्थितियों के मद्देनजर रखते हुये समूची मानव जाति के लिए भक्तिपूर्ण सामाजिक संस्कृति प्रधान, मार्गदर्शक ग्रन्य रामचरित मानस की रचना की है। सही मायने में तुलसी की इस काव्यरचना के समक्ष बाकि सभी रामकाव्य के अवि प्रतीत होते है तुलसीदास उच्च कोति के रचनाकार है।

प्रसिद्ध इतिहासकार बेन्सेंट स्मिथ ने "इन्हें अपने युग था सर्वक्षेष्ट पुरुष माना है। और इन्हें अकबर से भी महान इस कारण स्वीकार किया है कि इन्होने जो करोड़ो मानव हृदयों पर शाष्वत विजय अपनी रचनाओं द्वारा प्राप्त की है उनके सामने सम्राट अकबर की राजकीय विजय नगण्य है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार तुलसीदास जी ने बारह ग्रंथो की रचना की थी जिनमें से रामचरित मानस महाकाव्य है। बाकी रचनाएँ मसलन बारहों रामायण पार्वता मंगल जानकी मंगल, वैराग्य संजीवनी समाज्ञा **प्रष्न** दोहावली, कवितावली, गीतावली. श्री कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, और रामलला **नहहूँ** आदि मिलती है। यह रचनाएँ खंड काव्य, मुत्ताक काव्य प्रबंधात्मक मुक्तछ और **लोग** गीतात्मक मुक्तक काव्य रूप में रचित है।। तुलसी कृत रामचरित मानस वैश्विक साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। प्रस्तुत. ग्रंथ में वेद, शास्त्र, पुराण, धर्म, संस्कृति जीवन मूल्यो आदि का सार मिलता है। हालाकि तुलसी ने अपनी काव्य रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए मानस में लिखा हो की वे स्थांतः सुख हेतु रघुनाथ भाया लिख रहे है लेकिन उनकी सभी रचनाएँ लोक हित की दृष्टि से ही लिखी गई है। तुलसी के उत्तरकाण्ड में कनिकाल की विस्तृत चर्चा करते हैं

और रामकथा का आदर्श प्रस्तुत करते हुए समाज परिवर्तन की प्रेरणा देते है। तुलसी राम के अवतार का कारण बताते हैं

जब जब होइ धर्म की हानी ।

बाढहि असुर महा अभिमानी।

तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा।

हरहिं सफल सज्जन भव पीरा।

रामचरित में जीवन मूल्यो की आदर्श

व्याख्या - भारतीय जीवन मूल्यों की आदर्श

व्याख्या मानस में विद्यमान है। उदास्त मानव जीवन यात्रा की एक परिपूर्ण कल्पना का साकार रूप इसमें दिखलाई पड़ता है। रामचरित मानस का कलेवर सात कोडों में विभत है। यह ग्रंथ अवधी भाषा में दोहा-चौपाई छेद शैली में रचित है। प्रत्येक खंड का आरम्भ संस्कृत भाषा में मंगलचरण द्वारा दिया गया हो। यह ग्रंथ महज सनातन मूल्यों की पुनः स्थापना नहीं करता अपितु वर्तमान और भविष्य के लिए आदर्श रामराज्य का यूरोपिया भी प्रस्तुत करता है और राजनैतिक सीख का अतियुत्तम उदाहरण परोसता है। मानस के आदर्श श्री राम सर्वप्रथम एक आदर्श मानव है जो मानव कल्याण के लिए धरती पर अवतरित हुए है। वह धीर वीर और गंभीर है विप्र धेनु सुर संत हित लीन्छ मनुज अवतार रामचरितमानस में श्रीराम का श्रेष्ठ चरित्र एव सनातन मूल्यों का वर्णन - राम का व्यक्तित्व शील,शक्ति और सौंदर्य का अगाध भंडार है वह मर्यादा पुरुषोत्तम है। सनातन मूल्यों की रीति के पालक हो। राम का चरित्र से वा धर्म के दारा लोक लोक हित की सिद्धि करता है। वह सामान्य जन के लिए महती प्रेरणास्मद है। लिहाजा वर्तमान में राम विश्वनायक के चारित्रिक मूल्यों को धारण किसे हुए हमारे लिए आदर्श पुरुष के रूप में वंदनीय **है**।

श्रेष्ठ मातृ प्रेम एवं भक्ति - लक्ष्मण चपल और उग्र स्वभाव के पात्र है। भात्र प्रेमी है। भरत का **चरित्र** शीलता की अंतिम कसौटी है भात भदित का अनूठा आदर्श मानवीय चरित्र भी इससे उपर नहीं जा सकता। भरत का चरित इतना उज्वल है। श्री प्रकृति भी उनके हाति सहानुभुति रखती हो

जहें जहें **जाय** भरत रघुराया।

तहँ तहँ मेघ करहिं नवधमा ।

धर्मनिष्ठ पिता व सत्यवादी राजा - राजा दशरथ सत्य वादी धर्मनिष्ठ राजा है जो वचन देकर धर्म और प्राण देकर पुत्र प्रेम की रक्षा करते है,। रावण मेघनाथ जैसे राक्षक्षी चरित्र वाले अंहकारी पात्र है जो वर्म नीति से व्युत हो गए है। ऐसे पात्रों का अंत हम सभी को बुराई और असत्य की हार से अवगत कराता है। स्त्री पात्रों में सीता आदर्श भारतीय नारी की प्रतिमूर्ति है जो कर्तव्य भौर पति के साथ वन जाने हेतु वर्क पूर्ण उत्तर द्वारा राम को भी निरूतर कर देती है।

जिय विनु देहु नहीं बिनु वारि ।
तैसिये नाथ पुरुष विनु नारी।
कह चन्द्रिका चंद्र तजि जाई।
वात्सलय प्रेम - कौशल्या, सुमित्रा ममतामयी माँ का प्रतिनिधित्व करती है। कैकेयी को अंततः स्वकर्मा का पश्चाताप होता है और वह भी निर्मल हो जाती है।

लख सीय सहित सरल दोउ भाई।

कुटिल रानी पछितानि अधार।

चित्रकूट भी सभा में राम सर्वप्रथम कैकेथी चरण स्पर्श कर उन्हें अपराध बोध से मुक्त करते है। इस प्रकार, तुलसी जहाँ मानस के अदर्श स्त्री पात्रों के साथ-साथ अन्य स्त्री संबंधी कई सवालो से हमें रूबरू करवाती है यही समाधान भी देते चलती है।

निपकर्ष - वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रामचरित मानस एक प्राचीन ग्रंथ नहीं, बल्कि एक शाश्वत मार्ग दशकि है इसके मूल्य और सिद्धांत किसी विशेष काल या समाज तक सीमित नहीं है बल्कि सार्व भौमिक और कालातीत है। यह हमें एक बेहतर इंसान बनने, एक आदर्श समाज का करने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देता है। इसलिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी रामचरितमानस की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है और यह आने वाली पीढियों को भी सही दिशा प्रदान करता रहा है और करता रहेगा।

संन्दर्भ ग्रन्य सूची

1. गुप्त सुरेन्द्र दास (1972): भारतीय दर्शन का इतिहास राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर
2. नारेश आचार्य (1985): विशेष के लिए दष्टव्य क्षमता दर्शन और व्यबहार, वीकानेर।
3. तुवसी आचार्य (1945): आचार्य तुलसी का अमर संदेश कोलकता।
4. पण्डित श्रीराम शर्मा, आचार्य रामचरित मानस में मानब मूल्य (1991) गीता प्रेस गोरखपुर ।
5. डॉ लक्ष्मीनारायण:- सनातन रामपत्र और गोस्वामी तुलसीदास ।
6. पाण्डेय थी. सी. एनवायरमेन्टल एजूकेशन ईशा मुल, देहली (2005)
7. सिंह एण्ड सिंह (2000) भारतीय दर्शन ज्ञान का प्रकाशक नई (दिल्ली)